an>

Title : Need to address the problems of farmers in the country.

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा) ः आज देश भर में किसानों की क्या दुर्दशा है, यह किसी से छुपा हुआ नहीं है। किसान जो देश का अन्नदाता है, वही भूखा और बदहाली का जीवन जीने के लिए मजबूर है। किसान खुद तो भूखा सो जाता है, पर दूसरे का पेट भरने की चिन्ता उसे हमेशा सताती है। सरकार का कर्त्तव्य बनता है कि हमारे किसानों की समस्याओं का समुचित हल करे। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। हम अनाज के मामले में आत्म-निर्भर तो हो गए हैं, लेकिन किसान दिनों-दिन गरीब होता जा रहा है। यह एक विचारणीय प्रश्न है।

देश में 68 फीसदी खेती वर्षा पर निर्भर है और वर्षा कम व ज्यादा होने पर इसका सीधा असर खेती पर पड़ता है। सिंचाई की समुचित व्यवस्था अभी तक नहीं हो पाई है। बिचौलिए और साहूकारों के कर्ज के बोझ से किसान हमेशा दबा रहता है। देश के किसी बड़े भाग में बाढ़ आ जाती है, तो काफी बड़ा भू-भाग सूखे की चपेट मे रहता है। प्राकृतिक आपदाएं आती ही रहती हैं। समय से खाद और बीज नहीं मिलता है। उत्तम किस्म के बीजों का अभाव व उसका इतना अधिक मूल्य होता है कि किसान उसे खरीद नहीं पाते हैं। कीटनाशक दवाईयाँ भी अत्यधिक महंगी हो चुकी हैं। फसल बीमा योजना किसानों को किसी भी तरह से मदद करने में अपनी भूमिका साबित करने में असफल हो चुकी है। किसानों के फल और सब्जियों का रख-रखाव और समुचित मूल्य नहीं मिलता है। फसल पैदा होने पर खरीदार नहीं होते, जिससे बिचौलिए को मजबूरन कम दामों पर बेचना पड़ता है। जब किसानों के उत्पाद उनके हाथों से निकल जाता है, तो बाजार में रेट दोगुना हो जाता है। यह कैसा विडम्बना है।

मैं समझता हूं कि किसानों के बारे में किसी न किसी विषय पर प्रत्येक सत्र में चर्चा जरूर होती है। माननीय सदस्यगण, किसानों की समस्या के बारे में सरकार के सामने अपने विचार व्यक्त करते हैं, किन्तु सरकार उस पर यथोचित रूप से अमल नहीं करती है। जिसका परिणाम है कि आज देशभर के किसान आत्म हत्या करने के लिए मजबूर हो रहे हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2014 में तकरीबन 21 हजार किसानों ने आत्म हत्या की है और वर्ष 2015 में यह आकड़ा बढ़ने वाला ही होगा। यह कितनी शर्मनाक बात है कि हम देश के अन्नदाता को खुशहाल जीवन देने की दिशा में कोई ठोस पहल नहीं कर पाए हैं।